An Online Peer Reviewed Journal
www.thecommunicationsjournal.com

ISSN: 3139-3837 (Online)

# THE COMMUNICATIONS JOURNAL

AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MEDIA AND COMMUNICATIONS

A Monthly Journal of Media Research, Published in English and Hindi

**Volume: 01, Issue: 02, Month: February, Year 2026**

Email : editor@thecommunicationsjournal.com

# हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक: डाक्यूमेंट्री स्टोरीटेलिंग में एक सिनेमेटोग्राफ़िक रणनीति

**राजमणि मौर्य (असिस्टेंट प्रोफेसर एवं सिनेमेटोग्राफर), जय प्रकाश (फिल्म निर्देशक एवं टेक्निकल असिस्टेंट), सेंटर फॉर थिएटर एंड फिल्म, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, Email: maurya.rajmani9@gmail.com, Contact Number: +918874971493**

## भूमिका

एक बेहतरीन डाक्यूमेंट्री फिल्म बनाने के लिए तमाम तरह की रणनीतियाँ अपनानी पड़ती है। इनमें से एक बड़ी रणनीति सिनेमेटोग्राफी के हवाले से हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक (स्ट्रोएबेल, २०१३) की होती है। रुपहले पर्दे तक लाने में डॉक्यूमेंट्री के सफ़र में रणनीति की कई परतें एक साथ बुननी पड़ती हैं। जैसे विषय का चुनाव करना; वास्तविकता को रिकॉर्ड कर लेना; किसी को बिना बताए अटूट सत्य एवं तथ्यों को स्टोरीटेलिंग के द्वारा दर्शकों तक पहुँचाना; संपादन की प्रक्रिया द्वारा प्रमाणिक तथ्यों को उभारकर प्रस्तुत करना। डाक्यूमेंट्री स्टोरीटेलिंग के इस महत्वपूर्ण सफ़र में सिनेमेटोग्राफर/कैमरामैन/कैमरावोमेन के द्वारा हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक की सहायता से, वास्तविकता को बड़े पर्दे पर चित्रित करना ही एक सिनेमाटोग्रफिक रणनीति है (मेर्कादो, २०२२)।

इसी क्रम में, यह शोध पत्र *गंगापुत्र* (२०२१) (निर्देशक: जय प्रकाश; एडिटर: सौमित्रो खांत्रा; २०२१) नामक डाक्यूमेंट्री में हैंडहेल्ड शॉट्स का तरीका/नरेशन/ स्टोरीटेलिंग को टटोलेगी। इस डॉक्यूमेंट्री का चयन, शोध पत्र के लिए मूलतः दो कारणों से किया गया है — पहला, बतौर सिनेमेटोग्राफर राजमणि मौर्य, जो इस शोध पत्र के मुख्य लेखक भी हैं, उन्होंने इसमें अपने रचनात्मक शिल्प को परिलक्षित किया है; दूसरा यह डॉक्यूमेंट्री *इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल ऑफ़ इंडिया* (ई.एफ.एफ.आई-२०२१), *कोलकाता इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल* (के.आई.एफ.एफ-२०२१) एवं अन्य राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में शिरकत कर चुकी है।

यह डॉक्यूमेंट्री, इलाहाबाद कुम्भ मेले में "भूले-भटके" लोगों को मिलाने का सिलसिला शुरू करने वाले शख़्स राजाराम तिवारी की है। मात्र १६ साल की आयु में ही राजाराम जी ने इस कठिन काम का बीड़ा उठाया और निःस्वार्थ भाव से इस कार्य का अपने अंतिम सांस तक निर्वाहन किया। ऐसे शख़्स के जीवन की मर्म वेदना की कहानी को जब हूबहू दिखाने का निर्णय लिया गया, तब डॉक्यूमेंट्री अंदाज ही सबसे उचित माध्यम बना। इसके फल स्वरूप, कुम्भ मेले में लाखों की भीड़ में हैंडहेल्ड कैमरे से शॉट्स लेना आपने आप में ही बहुत चुनौतीपूर्ण काम रहा। यह शोध पत्र, हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक एवं स्टोरीटेलिंग के बीच के तनाव में गहरे संबंध को उजागर करते हुए, डॉक्यूमेंट्री सिनेमेटोग्राफी के विमर्श पर चर्चा करेगी (रबिगर, १९८७)। और चर्चा करते हुए, डॉक्यूमेंट्री स्टोरीटेलिंग की वास्तविकता को दर्शकों तक ले जाने की विद्या पर अपने विचार व्यक्त करेगी।

*मुख्य शब्द:* ***डॉक्यूमेंट्री, सिनेमेटोग्राफी, हैंडहेल्ड कैमरा, शॉट्स, कैमरा तकनीक, स्टोरीटेलिंग।***

## परिचय

हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक को सरल शब्दों में समझा जाए तो – डाक्यूमेंट्री फिल्म के विषय से सम्बंधित विषय-वस्तु, अधीन-व्यक्ति आदि के पीछे सिनेमेटोग्राफर/कैमरामैन/कैमरावोमेन तय आयत (फ्रेम) में कैमरा हाथ में लेकर भागता है, दौड़ता है, कूदता है, चढ़ता है, साथ – साथ चलता है, रुकता भी है, भीड़ के धक्के से गिरता भी है, चोट भी लगती है, चोरी करते हुए पकड़ा भी जाता है, इस तरह से रिकॉर्ड किया गया वीडियो हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक कहा जाता है।

किसी सिनेमेटोग्राफर के लिए सहज परिस्थिति में हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक  से रिकॉर्ड करना जितना आसान काम होता है, उतना ही कठिन काम होता है, असहज परिस्थितियों में रिकॉर्ड करना। डाक्यूमेंट्री फिल्म शूटिंग के दौरान सिनेमेटोग्राफर का सामना फील्ड वर्क में उन्मादी भीड़ से भी होता है, जो कभी कभी असामान्य स्थिति पैदा कर देती है। कभी-कभी इस तरह से भी कैमरा के सामने से संवाद होता है:

1. *"भईया एक फोटो खींच दीजिये"*
2. *"फिल्म शूटिंग हो रही है क्या ?"*
3. *"हीरोइन कौन है ?"*
4. *"फिल्म का नाम क्या है ?"*

एक सिनेमेटोग्राफर जब बिना किसी कैमरा रिग (कैमरा का यंत्र) के दौड़ता, भागता हुआ शॉट लेने की कोशिश में रहता है, तो वह अपने शरीर से ज्यादा कैमरा और शॉट की कीमत लगाता है। इसीलिए एक कहावत बहुत प्रचलित है फिल्म उद्योग जगत में — "ये करोंड़ों का शॉट है"। यह सिनेमेटोग्राफर का उसके काम के प्रति जूनून को दिखाता है कि वह किस हद तक हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक के द्वारा रिकॉर्ड करता है। हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक से शॉट्स में भावनाएं भी समाहित हो जाती हैं। जब कैमरा ट्रायपॉड पर ना हो कर सिनेमेटोग्राफर के हाँथ में हो तब सैद्धांतिक रूप से — कैमरे की हल्की आस्थिरता, फ्रेम की अनिश्चितता और कैमरा मूवमेंट की स्वाभाविकता दर्शक को यह महसूस करने पर मजबूर करती है कि, जैसे वह कैमरे के पीछे खड़े व्यक्ति के साथ घटनाओं को देख रहा हो| इससे भी ज्यादा दर्शक के मस्तिष्क में तनाव, मार्मिकता, सुख-दुःख, आँखों में आँसू, यथार्थ आदि भाव बहुत गहराई से उत्पन्न होते है।

हैंडहेल्ड सिनेमैटोग्राफी समकालीन सिनेमा में एक व्यावहारिक फ़िल्मांकन तकनीक से विकसित होकर एक महत्त्वपूर्ण सौंदर्यात्मक और कथात्मक उपकरण बन गया है (बॉर्डवेल, २००६; रॉम्ब्स, २००९)। जहाँ फ़िल्मकार यथार्थबोध, तनाव, आत्मीयता और आत्मनिष्ठ अनुभव को संप्रेषित करने हेतु हस्तधारित कैमरा संचालन का बारंबार प्रयोग करते हैं (ब्रौडी और कोहेन, २००९; सोबचैक, २००४), वहीं इस बात का अब तक पर्याप्त अनुसंधान नहीं हो पाया है कि छायाकार की कैमरे के साथ शारीरिक अंतःक्रिया और उससे उत्पन्न दृश्य अस्थिरता, दर्शकों की भावनात्मक संलग्नता तथा सिनेमाई यथार्थवाद में किस हद तक

योगदान करती है (देखें वॉटकिंस, २०१९)। यह अध्ययन हस्तधारित कैमरा तकनीकों, छायांकन अभिव्यक्ति और दर्शकों की संज्ञानात्मक एवं भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के अंतर्संबंध का विश्लेषण करते हुए इस शोध अंतराल को भरने का प्रयास करता है।

## साहित्य समीक्षा

इसी तरह निर्देशक जय प्रकाश द्वारा निर्देशित डाक्यूमेंट्री "गंगापुत्र" बहुत ही महत्वपूर्ण फिल्म है। यह फिल्म इलाहाबाद (प्रयागराज) में गंगा-यमुना संगम की रेत पर आयोजित कुम्भ/माघ मेले में बिछड़े लोगों को उनके परिजनों से मिलाने राजाराम जी के जीवन और उनके निःस्वार्थ कार्यों पर आधारित है। इस डाक्यूमेंट्री के फिल्मांकन की परिस्थितियाँ बहुत ही चुनौतीपूर्ण रही हैं — हैंडहेल्ड कैमरे का लाखों की भीड़ में निरंतर गतिशील बने रहना, फ्रेम की अनिश्चितता में भी रचनात्मकता और कलात्मकता को बनाये रखना एवं तकनीकी रूप से भी दृश्य की मजबूती बनाये रखना। हैंडहेल्ड कैमरा कभी लाखों-करोड़ों की भीड़ के साथ चल रहा है; कैमरा टूटे एवं छूटे हुए चप्पलों, कपड़ों, गठरियों के परिजनों को निहार रहा है; कैमरा राजाराम तिवारी के साथ खोये हुए लोगों के परिजनों को ढूढ़ रहा है; कैमरा कभी भीड़ में खो जाता है और किसी बिछड़े हुए व्यक्ति के चेहरे पर ठहर कर रोते हुए अपने परिजनों की आस को संरक्षित (किंग, २०१३) कर रहा है। यही हैंडहेल्ड कैमरा तकनीक, दर्शकों को कुम्भ मेले की अनियमितता और मानवीय करुणा को दर्शाता है।

## अध्ययन के उद्देश्य

फिल्म मेकिंग के कार्य (Practical Work) को शोध पत्र के ज़रिये अकादमिक जगत में शोध के लिए सूचनाओं का संग्रह बहुत महत्वपूर्ण है। एक बेहतरीन डाक्यूमेंट्री फिल्म बनाने के लिए कई तरह की रणनीतियों का उपयोग किया जाता है। जिसमे हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक एक सबसे महत्वपूर्ण सिनेमेटोग्राफिक रणनीतिक तकनीक है। किसी डाक्यूमेंट्री फिल्म निर्माण में विषय का चुनाव करना, वास्तविकता की रिकॉर्डिंग, तथ्यों का संपादन एवं प्रस्तुतिकरण की प्रक्रिया जैसे कई महत्वपूर्ण पहलू शामिल होते है। सिनेमेटोग्राफर हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक से वास्तविकता को परदे पर उतारता है। यह डॉक्यूमेंट्री, इलाहाबाद कुम्भ मेले में "भूले-भटके" लोगों को मिलाने का सिलसिला शुरू करने वाले शख़्स राजाराम तिवारी की है। मात्र १६ साल की आयु में ही राजाराम जी ने इस कठिन काम का बीड़ा उठाया। इस शोध पत्र में *गंगापुत्र* फिल्म के सिनेमेटोग्राफर एवं शोध पत्र के लेखक राजमणि मौर्य के द्वारा हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक और स्टोरीटेलिंग के सामंजस्य के संतुलन के गहरे सम्बन्ध को दर्शाते हुए रणनीतिक सिनेमेटोग्राफी पर चर्चा की जाएगी। हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक की कला द्वारा दर्शकों तक वास्तविकता पर विचार साझा किया जायेगा।

## वैचारिक रुपरेखा

रोबर्ट जे. फ्लाहर्टी (Robert J. Flaherty) को डाक्यूमेंट्री फिल्मों का जनक कहा जाता है। फ्लाहर्टी, उन्नीसवीं सदी(१९२२) के उत्तरार्ध में हडसन-बे क्षेत्र की खोज करते हुए इग्लू में रहने वाले मूल-निवासियों के जीवन का फिल्मांकन करते हुए "ननुक ऑफ़ द नॉर्थ", पहली फीचर लेंथ डाक्यूमेंट्री फिल्म को बनाया। बीसवीं सदी के आते-आते, अमेरिकन फिल्ममेकर फ्लाहर्टी ने एक नए फिल्म जेनर — डाक्यूमेंट्री को विकसित किया। स्कॉटिश फिल्ममेकर जॉन ग्रिएर्सन ने फ्लाहर्टी की फिल्म "मोअना"[1] की समीक्षा करने के उपरांत १९२६ में "डाक्यूमेंट्री" शब्द को गढ़ा था। जॉन ग्रिएर्सन को फिल्म विचारक, समीक्षक, और ब्रिटिश एवं कनाडाई डाक्यूमेंट्री फिल्मों का जनक भी माना जाता है।

डॉक्यूमेंट्री फिल्म बनाने की मुख्यतः दो  प्रक्रिया मानी गयी है। पहला तरीका बहुत ही सामान्य होता है, जिसके अंतर्गत फिल्म निर्माण के तीनों चरण - प्री-प्रोडक्शन, प्रोडक्शन और पोस्ट-प्रोडक्शन स्पष्ट और क्रमबद्ध ही होते हैं। इस प्रक्रिया  के अंतर्गत विषय चयन करना और उस पर रिसर्च करना, अंतरिम तय विषय पर स्क्रिप्ट का विकास करना, शूटिंग की प्लानिंग और लोकेशन का चयन, सौंदर्यात्मक और तकनीकी टीम का चयन, प्री-प्रोडक्शन के चरण में तय किए जाते हैं। इन्हीं तय कार्यों को प्रोडक्शन चरण (शूटिंग) के दौरान तय समय सीमा में किया जाता है। और तीसरे चरण में पोस्ट-प्रोडक्शन के अंतर्गत विडियो  एडिटिंग, डबिंग, वॉयस-ओवर, साउंड डिज़ाइन और मिक्सिंग, स्टोरीटेलिंग के अनुसार फिल्म को फाइनल रूप दिया जाता है। दूसरा तरीका बहुत ही असामान्य और अनियमित हालातों से जुड़ा होता है - जहाँ डॉक्यूमेंट्री समकालीन, आकस्मिक या असामान्य घटनाओं पर आधारित होती है। ऐसी स्थिति में प्रोडक्शन चरण को ही प्राथमिकता दी जाती है और कैमरा तत्काल हस्तक्षेप या हैंडहेल्ड कैमरा-टेक्नीक के माध्यम से रियलिटी में अपनी मौजूदगी दर्ज कराता है। जबकि प्री-प्रोडक्शन और पोस्ट-प्रोडक्शन की प्रक्रियाएं साथ-साथ विकसित होती रहती हैं, डॉक्यूमेंट्री निर्माण प्रक्रिया में तात्कालिकता, प्रामाणिकता और अवलोकनात्मक नजरिया केंद्रीय महत्व रखते हैं। इससे, फिल्म उसके वर्तमान स्थिति को सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भ में और भी प्रभावशाली बनाने में मदद करते हैं [बर्नार्ड, एस. सी. (2022)]।

दूसरी प्रणाली के तहत, हाथ से पकड़े जाने वाले कैमरे की तकनीक एक जरूरी फ़िल्मी उपकरण की तरह काम करती है। इस तकनीक का उद्देश्य दृश्य अनुभव में निरंतरता, स्वाभाविकता तथा यथार्थपरकता को बनाए रखना है। इस कार्यप्रणाली में यह अवधारणा निहित होती है कि, किसी भी तरह की असामान्य, अप्रत्याशित या संकटपूर्ण परिस्थिति में भी कैमरा संचालन को रोका नहीं जा सकता।

---

[1] मोअना, १०१६, <https://www.imdb.com/title/tt0017162/?ref=nvsrsrsg0tt3nm0in0qmoana%25201926>, फ़रवरी १२, २०२६|

परिणामस्वरूप, कैमरा लगातार चालू रहता है और रिकॉर्डिंग का काम बिना किसी रुकावट के पूरा किया जाता है। यह रिकॉर्डिंग लगातार दो दिन, चार दिन या दस दिनों तक भी बढ़ सकती है। इस तकनीक में सिनेमेटोग्राफर को शारीरिक और मानसिक चुनौती से भी जूझना पड़ता है। ऐसे हालातों में सिनेमेटोग्राफर का किरदार बेहद पेचीदा होता है, क्योंकि उसे विपरीत माहौल, शारीरिक थकावट और समय की पाबंदियों के बावजूद हर शॉट की 'तकनीकी शुद्धता', कलात्मक प्रकटीकरण और रचनात्मक बनावट को संतुलित रूप से बनाए रखना होता है। फ्रेमिंग, कैमरा मूवमेंट, प्रकाश  और दृश्य संरचना पर लगातार नियंत्रण रखना इस कार्यप्रणाली की एक प्रमुख विशेषता समझी जाती है, जो अंततः स्टोरीटेलिंग एवं दृश्य-भाषा की प्रभावशीलता को मजबूत करती है।

सामान्यतः एक्सपोज़र नियंत्रण में अपर्चर, शटर-स्पीड, आइ. एस.ओ. तीन अवयवों का समायोजन होता है। हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक में एक्सपोज़र नियंत्रण की प्रक्रिया के दौरान शटर-स्पीड की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। इस तकनीक में कैमरा स्थिर न होने के कारण, फ्रेम में अनियमित मूवमेंट और मोशन ब्लर (धुँधला) उत्पन्न होने की संभावना अधिक रहती है। ऐसी स्थिति में केवल एक पेशेवर और अनुभवी सिनेमेटोग्राफर ही कैमरा संचालन के समय यह सही निर्णय ले सकता है कि शटर की स्पीड कितनी रखी जानी चाहिए। सामान्यतः कैमरा की न्यूनतम शटर-स्पीड १/६० सेकंड होती है, लेकिन जब हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक का प्रयोग किया जाता है, तब शटर-स्पीड ०१/८० सेकंड या ०१/१०० सेकंड से कम नहीं होनी चाहिए (मैस्सेली, १९९८)। शटर-स्पीड का यह समायोजन फ्रेम के भीतर किसी व्यक्ति या वस्तु की गति (मोशन) को स्पष्ट और नियंत्रित बनाए रखने में सहायक है, जिससे दृश्य धुंधला या अस्थिर प्रतीत नहीं होता। इस प्रकार, शटर-स्पीड का संतुलित उपयोग हैंडहेल्ड सिनेमेटोग्राफी में दृश्य गुणवत्ता और यथार्थवादी प्रभाव को बनाए रखने में निर्णायक भूमिका निभाता है।

## शोध कार्यप्रणाली

यह शोध पद्धति डॉक्यूमेंट्री फिल्म निर्माण में आटोपोएटिक (Autopoietic) दृष्टिकोण को वर्णित करती है, जहाँ फिल्म स्वयं एक आत्म-उत्पादक प्रक्रिया के रूप में कार्य करती है। यह दृष्टिकोण अम्बर्टो मातुराना और फ्रांसीस्को वारेला के सिस्टम थ्योरी से प्रेरित है, जिसमें फिल्म अपनी संरचना को स्वयं उत्पन्न और पुनरुत्पादित करती है।आटोपोएटिक अवधारणा का आधार आटोपोएटिक दृष्टिकोण में डॉक्यूमेंट्री फिल्म एक बंद प्रणाली के रूप में विकसित होती है, जो बाहरी वास्तविकता को निष्क्रिय रूप से प्रतिबिंबित करने के बजाय, निर्माता की व्यक्तिपरक अनुभूति और पर्यावरणीय अंतर्क्रियाओं से स्व-निर्मित होती है। फिल्म निर्माण प्रक्रिया में स्व-प्रतिबिम्बन (self-reflexivity) केंद्रीय है, जहाँ कैमरा, ध्वनि और संपादन तत्व फिल्म के भीतर ही अपनी उत्पत्ति का खुलासा करते हैं। उदाहरणस्वरूप, फिल्ममेकर

अपनी उपस्थिति को फिल्म में शामिल कर प्रक्रिया को पारदर्शी बनाते हैं, जैसे जिल डेनियल्स की फिल्मों में व्यक्तिगत स्मृति की खुदाई।

शोध उद्देश्य और प्रश्नयह पद्धति निम्नलिखित उद्देश्यों पर केंद्रित है:डॉक्यूमेंट्री में काव्यात्मक (Poetic) मोड्स का उपयोग कर आटोपोएटिक संरचना का विश्लेषण। भारतीय संदर्भ में, जैसे जश्न-ए-आजादी जैसी आत्म-परावर्ती (Reflexive) डॉक्यूमेंट्रीज में स्व-उत्पादन की जांच।शोध प्रश्न: डॉक्यूमेंट्री कैसे अपनी सत्यता को आत्म-निर्मित नियमों से परिभाषित करती है? शोध डिजाइनमिश्रित विधि (Mixed-methods) अपनाई जाती है, जिसमें:स्व-नृवंशविज्ञान (Autoethnography – *अपने कार्यों के अनुभवों, स्मृतियों, भावनाओं, और सामाजिक संदर्भ का अध्ययन करना है*): फिल्ममेकर अपनी व्यक्तिगत स्मृतियों को फिल्म में अंतर्निहित करते हैं, जैसे आघातपूर्ण अनुभवों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति। प्रयोगात्मक निर्माण: कच्चे फुटेज को गैर-रैखिक संपादन द्वारा पुनर्गठित किया जाता है, जिसमें दोहराव (Repetition) और ध्वनि-दृश्य संगति स्वयं प्रणाली का निर्माण करती है। सैद्धांतिक सूक्ष्मताप्रणाली संचालनिक रूप से बंद होती है, अर्थात् उसके संचालन बाहरी इनपुट से निर्धारित नहीं होते। डॉक्यूमेंट्री में यह आत्म-परावर्ती दोहराव (Reflexive Loops) से प्रकट होता है। फिल्ममेकर का बॉडी लैंग्वेज (Embodied) उपस्थिति कथा को पुनर्परिभाषित करता है। निक्लास लुहमान के सामाजिक ऑटोपोएसिस (Social Autopoiesis) से जुड़कर, यह मीडिया की स्वायत्त अर्थ-रचना को उजागर करता है। उद्देश्य और अनुसंधान प्रश्न उद्देश्य: प्रक्रिया को आटोपोएटिक चक्र के रूप में ट्रेस करना।

## चर्चा

सिनेमेटोग्राफर को फ्रेमिंग और कैमरा मूवमेंट की प्रक्रिया में त्वरित निर्णय लेनें की कलात्मक क्षमता होनी चाहिए। सिनेमेटोग्राफर की भूमिका केवल कैमरा संचालित करने तक सीमित नहीं है; बल्कि यह दृश्य रचना, भावनात्मक प्रभाव और कथा प्रवाह (स्टोरीटेलिंग) के संतुलन का पूर्णत: नियंत्रण लेने वाली पेशेवर क्षमता है। हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक के समय त्वरित निर्णायक बिंदु निम्न हैं:

**फ्रेमिंग और शॉट चयन:** सिनेमेटोग्राफर को फ्रेमिंग और कैमरा मूवमेंट के दौरान त्वरित और अंतरिम निर्णय लेने में सक्षम होना चाहिए। उसे यह स्पष्ट होना चाहिए कि कब क्लोज़ शॉट, कब लॉन्ग शॉट या कब वाइड शॉट उपयुक्त है। पात्रों के भाव, प्रतिक्रिया और दृश्य की संगीति के आवश्यकतानुसार शॉट का चयन स्टोरीटेलिंग की प्रभावशीलता को बढ़ाता है। *गंगापुत्र* के संदर्भ में, फ्रेमिंग एवं शॉट चयन का एक उदाहरण इस शोध पत्र में साझा कर रहा हूँ — एक महिला राजाराम जी के भूले-बिसरे शिविर में अपने बच्चे को ढूढ़ते हुए आई है। कैमरा वाइड शॉट में पीछा करते हुए उनके चेहरे पर क्लोज शॉट (१६:२५ मिनट, २०:१९ मिनट) में आ कर ठहरता है। जिससे महिला के चेहरे की मार्मिकता और उससे उत्पन्न भाव सिनेमेटोग्राफर के त्वरित और अंतरिम निर्णय का प्रत्यक्ष उदाहरण है।

**कैमरा मूवमेंट और स्थिरता:** किसी विशेष भाव, चेहरे या प्रतिक्रिया पर कैमरा स्थिर रखना स्टोरीटेलिंग की संवेदनशीलता और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता को बढ़ाता है। मूवमेंट और स्थिरता का सामंजस्य दृश्य के कथानक और भावनात्मक धारा के अनुरूप होना चाहिए। *गंगापुत्र* के संदर्भ में, कैमरा मूवमेंट और स्थिरता का एक उदाहरण इस शोध पत्र में साझा कर रहा हूँ — कुम्भ मेले के लाखों -करोंड़ों की भीड़ में सिनेमेटोग्राफर वाइड शॉट में कैमरा मूवमेंट की सहायता से भीड़ में अलग-अलग बच्चों को दिखा रहा है। उसके बाद जब महिला को उसकी बच्ची मिल जाती है, तब सिनेमेटोग्राफर कैमरा स्थिर (२३:29 मिनट) रखते हुए महिला के सूक्ष्म मनोभाव (बिछड़ने के बाद मिलने की खुशी के आँसू, बार-बार चूमना, गले लगाना) को संरक्षित कर लेता है।

**पॉइंट ऑफ़ व्यू शॉट्स:** सिनेमेटोग्राफर को पात्र के दृष्टिकोण से किसी स्थिति, वस्तु या घटना को देखने, समझने और अनुभव करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए। पॉइंट ऑफ़ व्यू शॉट्स शॉट का समुचित प्रयोग कथा में दर्शक को भावनात्मक जुड़ाव और दृश्य अनुभव प्रदान करता है। इसका संतुलित उपयोग सिनेमेटोग्राफी में परिपक्वता, संवेदनशीलता और कथात्मक स्पष्टता को दर्शाता है (व्हीलर, २००५)। सिनेमेटोग्राफर की कलात्मक दक्षता और तकनीकी समझ फिल्म की दृश्य प्रभावशीलता और कथानक की स्पष्टता के लिए अनिवार्य है। फ्रेमिंग, शॉट चयन, कैमरा मूवमेंट और पॉइंट ऑफ़ व्यू शॉट्स का समन्वित प्रयोग सिनेमेटोग्राफी की पेशेवर परिपक्वता को सुनिश्चित करता है। *गंगापुत्र* के संदर्भ में, पॉइंट ऑफ़ व्यू शॉट्स का एक उदाहरण इस शोध पत्र में साझा कर रहा हूँ — भूले-बिसरे शिविर में घोषणा कक्ष में खोये हुए लोगों की पर्ची (नाम,गाँव,हुलिया आदि की जानकारी) की संख्या इतनी ज्यादा होती है (१४:११ मिनट) कि, जितनी कुम्भ मेले में भीड़। सिनेमेटोग्राफर ने घोषणा कक्ष में पर्चियों (१४:११ मिनट) को कैमरा से ढूढ़ते हुए ऐसा दिखाया है, जैसे कुम्भ मेले में लोग अपनों को ढूढ़ते हैं।

**निष्कर्ष एवं सुझाव:**

हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक किसी सिनेमेटोग्राफर के लिए मात्र एक तकनीकी विधि नहीं है, बल्कि यह उसके सृजनात्मक व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा बन जाती है। इस तकनीक का उपयोग करते समय वह अपने कार्य से शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, रचनात्मक, कलात्मक और तकनीकी स्तर पर गहराई से जुड़ता है। कैमरे को अपने हाथों में संभालते हुए वह डाक्यूमेंट्री स्टोरीटेलिंग की गति, लय और संवेदना को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करता है, जिससे दृश्य अधिक यथार्थ, जीवंत और वास्तविक बनते हैं। हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक सिनेमेटोग्राफर की रचनात्मक और कलात्मक दृष्टि को भी सशक्त बनाती है। यह उसे परिस्थितियों के अनुरूप तुरंत निर्णय लेने, फ्रेमिंग में लचीलापन रखने और कहानी के भाव को स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता देती है। तकनीकी दृष्टि से भी यह विधि उच्च स्तर की एकाग्रता, संतुलन, कौशल एवं अनुभव की मांग करती है। इस प्रकार, हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक केवल एक

उपकरण नहीं, बल्कि सिनेमेटोग्राफर और डाक्यूमेंट्री स्टोरीटेलिंग में दृश्य के बीच जीवंतता स्थापित करने का प्रभावी माध्यम बनता है।

हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक का उपयोग करते समय सिनेमेटोग्राफर को कई सावधानियाँ बरतनी पड़ती हैं। खासकर डॉक्यूमेंट्री फिल्म निर्माण में आमतौर पर हल्के कैमरा उपकरणों का इस्तेमाल किया जाता है, ताकि सिनेमेटोग्राफर कैमरे को आराम से संभाल सके और फ्रेमिंग, कैमरा मूवमेंट और फोकस पर प्रभावी नियंत्रण बनाए रख सके। हल्के उपकरण न केवल काम की गतिशीलता बढ़ाते हैं, बल्कि वास्तविक परिस्थितियों में तेजी से प्रतिक्रिया करने की क्षमता भी बढ़ाते हैं। हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक में कैमरा का संतुलन, स्थिरता और शरीर की मुद्रा का विशेष ध्यान रखा जाना जरूरी है, क्योंकि थोड़ी भी लापरवाही डाक्यूमेंट्री स्टोरीटेलिंग की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती है। सिनेमेटोग्राफर को प्राकृतिक प्रकाश, विषय-वस्तु/व्यक्ति की गति और परिवेश के अनुसार तुरंत निर्णय लेने पड़ते हैं। इस तरह, हैंडहेल्ड कैमरा-तकनीक केवल तकनीकी दक्षता ही नहीं, बल्कि सजगता, रचनात्मक, कलात्मक अनुभव के लिए भी महत्वपूर्ण है, जिससे डॉक्यूमेंट्री फिल्म अधिक वास्तविक, यथार्थवादी, स्वाभाविक, जीवंत और प्रभावशाली बन सके।

**आभार**

इस शोध पत्र के लेखन के दौरान सबसे पहले मैं फिल्म-*गंगापुत्र* की प्रोडूसर सरिता जी का आभार व्यक्त करता हूँ। फिल्म के निर्देशक और इस शोध पत्र के सह-लेखक जय प्रकाश जी का आभार व्यक्त करता हूँ। कैसे फिल्म मेकिंग के कार्यों को अकादमिक जगत में शोध पत्र के ज़रिये शब्दों में पिरोया जाय, इसकी पूरी परिकल्पना डॉ. अनिर्बान के देख-रेख संपन्न हुई है, जो कि मेरे शोध निर्देशक भी है आपका भी बहुत आभार व्यक्त करता हूँ। मैं अपने साथी विशाल विजय जी का भी आभार व्यक्त करता हूँ। साथ में मेरी पत्नी प्रीती का आभार वयक्त करता हूँ। और अंत में यह फिल्म जिनके निःस्वार्थ कार्यों को दर्शाती है राजाराम जी और उनके पुरे परिवार का भी आभार व्यक्त करता हूँ। राजाराम जी हमेशा स्मृतियों में रहेंगे।

## कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपयोग घोषणा

फिल्म मेकिंग के कार्य (Practical Work) को अकादमिक भाषा में लिखना आसान नहीं होता है। फिल्म मेकिंग की भाषा और अकादमिक भाषा का संतुलन बना रहे, इसीलिए मैंने इस शोध पत्र को लिखने के दौरान भाषा-व्याकरण, वाक्य-संरचना को त्रुटिपूर्ण रखने एवं पाठक को असुविधा ना हो, इसके सुधार के लिए कुछ कृत्रिम बुद्धिमत्ता टूल (Chat GPT, Copyleaks, TextGens) का उपयोग किया है। मैंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता टूल के उपयोग के बाद प्राप्त उत्तर की समीक्षा और भाषा का संपादन किया है और मेरे द्वारा लिखे गये, इस शोध पत्र की सम्पूर्ण सामग्री की जिम्मेदारी मैं स्वंय लेता हूँ।

**ग्रन्थ-सूची**


बाज़िन, आंद्रे, और टिमोथी बरनार्ड। 2009, सिनेमा क्या है? पहला संस्करण। मॉन्ट्रियल: काबूज़।

ग्रियर्सन, जे. (1966), *Grierson on documentary* (फोरसिथ हार्डी, संपादक), यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस ।

बर्नार्ड, एस. सी. (2022)। डॉक्यूमेंट्री स्टोरीटेलिंग: क्रिएटिव नॉन-फिक्शन ऑन स्क्रीन,पांचवाँ संस्करण. रूटलेज।
बॉर्डवेल, डेविड. *द वे हॉलीवुड टेल्स इट: स्टोरी एंड स्टाइल इन मॉडर्न मूवीज़.* यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस, २००६.

ब्रौडी, लियो, और मार्शल कोहेन, संपादक. *फ़िल्म थ्योरी एंड क्रिटिसिज़्म: इंट्रोडक्टरी रीडिंग्स.* 7वाँ संस्करण, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, २००९.

रॉम्ब्स, निकोलस. *सिनेमा इन द डिजिटल एज.* वॉलफ़्लॉवर प्रेस, २००९.

सोबचैक, विवियन. *कार्नल थॉट्स: एम्बॉडीमेंट एंड मूविंग इमेज कल्चर.* यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस, २००४.

वॉटकिंस, लिज़. *द हैंडहेल्ड कैमरा: एस्थेटिक्स एंड अफ़ेक्ट इन कंटेंपरेरी सिनेमा.* पैलग्रेव मैकमिलन, २०१९.

जोसेफ वी. मैस्सेली, 5C's ऑफ़ सिनेमैटोग्राफी, लॉस एंजेलेस: सिलमैन-जेम्स प्रेस।

ब्राउन, ब्लेन, २०१२, सिनेमैटोग्राफी: सिद्धांत और अभ्यास: सिनेमैटोग्राफर्स और निर्देशकों के लिए छवि निर्माण। दूसरा संस्करण, न्यूयॉर्क: फोकल प्रेस, टेलर और फ्रांसिस ग्रुप।

व्हीलर, पॉल, २००५, प्रैक्टिकल सिनेमैटोग्राफी। दूसरा संस्करण. ऑक्सफोर्ड: एल्सेवियर/फोकल प्रेस।

फिल्म – गंगापुत्र, २०२०।

फिल्म - ननुक ऑफ़ द नॉर्थ, १९२६।

फिल्म – मोअना, १९२६।

स्ट्रोएबेल, २०१३, व्यू कैमरा तकनीक,न्यूयॉर्क; लंदन: फोकल प्रेस।

मर्काडो, २०२२, “फ़िल्म मेकर्स आई: लर्निंग (एंड ब्रेकिंग) द रूल ऑफ़ सिनेमेटिक, दूसरा संस्करण, न्यूयॉर्क: फोकल प्रेस,।